PRIVATE CIRCULATION ONLY

दिव्य ज्योति

सितम्बर 2010 ISSUE 1009 ''मैं संसार की ज्योति हूँ'' न्यूज़ लैटर

हमें, आपके अनुयायियों को, सब कुछ छोड़ने पर क्या मिलेगा?

क्या आप...

ईश्वर को कुछ दे सकते हो? क्या आप उसके लिए कुछ त्याग कर सकते हो? क्या आप उसके अनुयायी बनने के लिए सब कुछ छोड़ सकते हो– अपनी सारी सम्पत्ति, घर, भाई–बहन, माता–पिता, बाल–बच्चे, मित्र, रिश्तेदार और ज़मीन–जायदाद? क्या आप प्रभु येशु पर विश्वास के खातिर दुःख और अपमान, बैर और अत्याचार सह सकते हो? क्या आप उसके लिए अपना जीवन तक कुर्बान करने को तैयार हो और प्रभु पर विश्वास के कारण इस जीवन को खोने से भी डरते नहीं हो? **अगर आप यह सब कर भी दोगे, तो आप को आखिर क्या मिलेगा?** (इस प्रश्न का जवाब आपको इसी लेख में अगले पृष्ठ पर मिल जायेगा।)

इन प्रश्नों का जवाब आप स्वंय से पूछ सकते हो। और ये जवाब आपके प्रभु पर विश्वास व उनके प्रति प्रेम की कसौटी होगी। क्योंकि ईश्वर से कुछ न कुछ माँगने, जैसे रोगों से मुक्ति, अच्छी नौकरी और अच्छी कमाई, धन–सम्पत्ति, बच्चे का वरदान, अच्छा वर या वधू, नशीली पदार्थों के सेवन से मुक्ति, जीवन में सफलता और उन्नति, घर–परिवार में शान्ति और प्रेम, पापों से मुक्ति, ज्ञान–विवेचन, पवित्र आत्मा व उसके वरदान, ईश्वर के दर्शन इत्यादि, के लिए प्रार्थना करने व दया याचना करने के लिए तो सभी आते हैं और कोई ऐसा कहेगा भी नहीं कि उसे इनमें से कुछ भी नहीं चाहिए क्योंकि कोई भी परिपूर्ण, पवित्र या सर्वसम्पन्न नहीं है। पर कोई यह नहीं सोचता कि मैं ईश्वर के लिए क्या दे सकता हूँ या क्या कर सकता हूँ, कैसे मैं ईश्वर को प्रसन्न कर सकता हूँ, कैसे मैं औरों को अपने प्रभु के पास ला सकता हूँ और कैसे अनन्त जीवन प्राप्त कर सकता हूँ। यह बात केवल उसका सच्चा अनुयायी या दास ही सोच सकता है, इस संसार का साधारण मनुष्य नहीं, जिसमें स्वार्थ, लोभ–धन-सम्पत्ति इत्यादि के लिए, घमण्ड, आत्मनिर्भरता, ईर्ष्या व सांसारिक वासनाँए कूट–कूट कर भरी हुई हैं। तो, क्या आप **प्रभु येशु के सच्चे अनुयायी** हैं? प्रभु येशु के इन चुनौती देने वाले वचनों को पढ़कर स्वंय को परख कर देख लें कि क्या आप उनके शिष्य कहलाने योग्य हैं कि नहीं–

प्रभु के सच्चे अनुयायी:

प्रभु येशु ने कहा- "जो मेरा अनुसरण करना चाहता है, वह आत्मत्याग करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठा कर मेरे पीछे हो ले।"

"हल की मूठ पकड़ने के बाद जो मुड़ कर पीछे देखता है, वह ईश्वर के राज्य के योग्य नहीं।"(लूकस 9:23, 62; 14:27)

"जो अपने पिता या अपनी माता को मुझ से अधिक प्यार करता है, वह मेरे योग्य नहीं। जो अपने पुत्र या अपनी पुत्री को मुझ से अधिक प्यार करता है, वह मेरे योग्य नहीं। जो अपना क्रूस उठाकर मेरा अनुसरण नहीं करता, वह मेरे योग्य नहीं।"

"जो लोग मुझे 'प्रभु! प्रभु!' कह कर पुकारते हैं, उन में सब-के-सब स्वर्गराज्य में प्रवेश नहीं करेंगे। जो मेरे स्वर्गिक पिता की इच्छा पूरी करता है, वही स्वर्गराज्य में प्रवेश करेगा।"(मत्ती 10:37-39; 7:21)

प्रभु के प्रेम, शान्ति, आनन्द, करूणा, क्षमा

(शेष भाग पृष्ठ 2 पर)

अपने पुत्र प्रभु येशु के लिए दुःख भोगने वाली ईश-दासी से दुःखी बच्चों की दया याचना!

पवित्र कलीसिया मध्य सितम्बर में (15 सितम्बर) **धन्य कुवाँरी मरियम के दुःखों का पर्व** मनाती है। इससे एक सप्ताह पहले, यानि 8 सितम्बर को, वह उनका जन्मदिवस बड़े धूम-धाम से मनाती है।

माँ मरियम, ईश्वर पुत्र की जननी, के पवित्र एवं दुःख-भरे जीवन द्वारा जीवन की एक सच्चाई हमारे सामने आती है कि हमें भी अपने जीवन में दुःखों, कष्टों, पीड़ाओं, परीक्षाओं एवं प्रलोभनों को ईश्वर की इच्छा मानकर पूर्ण विश्वास के साथ सामना करना चाहिए जिससे हमारा आध्यात्मिक निर्माण हो, हम ईश्वर के और करीब आ सकें और पवित्रता एवं परिपूर्णता को प्राप्त करने में सफल हो जायें। आत्मत्याग करते हुए क्रूस के पथ पर चलकर ही हमें वो महिमा का मुकुट प्राप्त हो सकेगा जो सभी सन्तों ने

(शेष भाग पृष्ठ 2 पर)

"जब तक गेहूँ का दाना मिट्टी में गिर कर नहीं मर जाता, तब तक वह अकेला ही रहता है; परन्तु यदि वह मर जाता है, तो बहुत फल देता है। जो अपने जीवन को प्यार करता है, वह उसका सर्वनाश करता है और जो इस इस संसार में अपने जीवन से बैर करता है, वह उसे अनन्त जीवन के लिए सुरक्षित रखता है।"(योहन 12:24-25)

(पृष्ठ 1 का शेष भाग)

पवित्र माता से दया याचना!!

प्राप्त किया है।

अपने विश्वास व धैर्य के कारण इस संसार पर अवश्य ही हम विजय प्राप्त कर लेंगे। प्रभु येशु की विजय तभी पूर्ण होगी जब हम सभी पाप पर, मृत्यु पर व संसार पर विजय प्राप्त कर लेंगे। प्रभु येशु, ईश्वर के पुत्र होने के नाते, अपने पिता व हमारे बीच मध्यस्थ बने हुए हैं और माता मरियम हमारे और अपने पुत्र प्रभु येशु के मध्य एक बिचवई बनी हुई हैं जो अब भी हम पापी बच्चों के मन-परिवर्तन, पाप क्षमा और मुक्ति के लिए आँसू बहाती रहती हैं। जब तक वह अपने सभी बच्चों को अपने पुत्र तक पहुँचा नहीं देगी, वह हमारे लिए प्रार्थना करती व आँसू बहाती रहेगी। इसलिए हम उस माँ के शोक-सन्तप्त हृदय की वेदना, व्याकुलता व ममता को देखते हुए उनसे अपने लिए विनयपूर्वक व कृतज्ञतापूर्वक याचना करें!

दुःखों की माता से प्रार्थना

हे मरियम! दुःखों की माता, अपने पुत्र के क्रूस के नीचे खड़े होकर तूने असहनीय पीड़ा को झेला और इस तरह धैर्य के साथ हमारे प्रति प्रेम के कारण प्रभु के दुःखभोग व मृत्यु में स्वंय सहभागी हुई। तू ही हमारे दुःखों, पीडाओं, कष्टों, आवश्यकताओं और कमज़ोरियों को भली–भाँति जानती है। हम तुझसे यह विनती करते हैं कि तू उस अनादि-अनन्त स्वर्गीय पिता को अपने प्रिय पुत्र येशु को, जिसका शरीर घावों से भरा और रक्त-रंजित है, हमारे पापों की मुक्ति के लिए, इस अन्धकारमय संसार के सभी पापियों के मन-परिवर्तन के लिए, अधोलोक में फँसी हुई आत्माओं की शान्ति के लिए व मेरे इस विशेष कृपा की प्राप्ति के लिए, अर्पित कर दे। आमेन।

(अपना विशेष निवेदन रखें)

हे दुःखों से भरी निष्कलंक माता,

हमारे लिए प्रार्थना कर।

हे पिता हमारे...

प्रणाम मरिया...(3 बार)।

हमें... सब कुछ छोड़ने पर क्या मिलेगा?

(पृष्ठ 1 का शेष भाग)

व शक्ति का अनुभव करना एक बात है, और उनके इस प्यार के कारण संसार से बैर करना, अपनी सभी सांसारिक इच्छाओं को त्याग देकर उनकी आज्ञाओं का पालन करना,ख़तरे मोल लेना, अपमान व अत्याचार चुपचाप खुशी से सह लेना और अपने जीवन तक को गँवा देना दूसरी बात है।

ऐसा हज़ारों ने किया है और सन्त व शहीद बन गये हैं, दूसरों के लिए आदर्श रखते हुए प्रेरणा का स्त्रोत बन गये हैं। पर यह उनसे कैसे सम्भव हो पाया– निरन्तर प्रार्थना व उपवास, त्याग और दुःख-पीड़ा सहना– यह ईश्वर की पवित्र आत्मा की सहायता व कृपा से ही हो पाया। प्रभु येशु के बारह शिष्यों में से दस प्रेरित, जिन्हें पवित्र आत्मा पेन्तेकोस्त के दिन से प्राप्त था, अपने विश्वास के खातिर शहीद हुए। आप जानते हैं उन्हें क्या मिला? न केवल अनन्त जीवन, पर मानवपुत्र के साथ बारह सिंहासनों पर बैठ कर सभी का अन्तिम दिन न्याय करने का अधिकार।

एक बार पेत्रुस, कलीसिया के प्रथम पोप व प्ररितों में प्रमुख, ने येशु से कहा, "देखिए, **हम लोग अपना सब कुछ छोड़कर आपके अनुयायी बन गये हैं। तो, हमें क्या मिलेगा?"** येशु ने अपने शिष्यों से कहा, "मैं तुम, अपने अनुयायियों से कहता हूँ– मानवपुत्र जब पुनरूत्थान में अपने महिमामय सिंहासन पर विराजमान होगा, तब तुम लोग भी **बारह सिंहासनों पर बैठ कर इस्राएल के बारह वंशों का न्याय करोगे।** और जिसने मेरे लिए घर, भाई–बहनों, माता–पिता, पत्नी, बाल–बच्चों अथवा खेतों को छोड़ दिया है, वह **सौ गुना पायेगा** और **अनन्त जीवन का अधिकारी** होगा।" **(मत्ती 19:27-29) कितना अमूल्य है यह पुरस्कार!!**

यह बात पेत्रुस ने तब पूछी थी जब उन्हें मालूम चला कि धनी व्यक्तियों का स्वर्गराज्य में प्रवेश करना, ईश्वर की कृपा के बिना, असम्भव है, चाहे वह ईश्वर की दस आज्ञाओं का ही पालन क्यों न करता आया हो। जब एक धनी नवयुवक ने, जो दस आज्ञाओं का पालन करता आया था, प्रभु से जब अपनी कमी के बारे में पूछा जिससे वह अनन्त जीवन से वंचित हो सकता था, तो प्रभु ने उसे यह उत्तर दिया, **"यदि तुम पूर्ण होना चाहते हो, तो जाओ, अपनी सारी सम्पति बेच कर गरीबों को दे दो और स्वर्ग में तुम्हारे लिए पूँजी रखी रहेगी। तब आकर मेरा अनुसरण करो।"** वह नवयुवक यह करने में असमर्थ था और उदास होकर चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था। बहुत–से लोग इस संसार में धन बटोरने में लग जाते हैं, उसी में मन लगा लेते हैं, उसके दास बन जाते हैं, उसी के लिए जीते हैं और उस पर भरोसा कर ईश्वर व अपने गरीब भाई–बहनों को भूल जाते हैं। जब उनके हृदय में ईश्वर के लिए जगह नहीं रह जाती, तो हर तरह की बुराईयाँ और पाप आ जाते हैं। क्योंकि धन का लालच सब बुराईयों की जड़ है और वे ईश्वर और धन–दोनों की सेवा नहीं सकते। वे ईश्वर को नहीं, धन को प्रथम स्थान देकर उसके आराधक बन जाते, उसे ज़िन्दगी भर छोड़ नहीं पाते और स्वर्ग गँवा देते हैं। प्रभु येशु कहते हैं, **"सावधान रहो और हर प्रकार के लोभ से बचे रहो; क्योंकि किसी के पास कितनी ही सम्पत्ति क्यों न हो, उस सम्पत्ति से उसके जीवन की रक्षा नहीं होती।"(लूकस 12:15)** और न ही कोई धन अपने साथ मरने पर कहीं ले जा सकता है।

हम इस आधुनिक युग में रहते हैं जहाँ मनुष्य ने धन कमाने की होड़ में अपने जीवन को एक चलती–फिरती मशीन जैसे बना लिया है और पाप करने के भी आधुनिक तरीके ढूँढ लिए हैं। पर हम ऐसे समय और माहौल में रहते हैं जहाँ कभी भी और कहीं भी हम पर आपत्ति आ सकती है। किसी के जीवन का भरोसा नहीं है। आने वाले कल का, अगले पल का हमें कुछ पता नहीं है। हमारे इर्द–गिर्द कई लोग डेंगु, मलेरिया, टी. बी., कैन्सर, एड्स आदि नई–नई बीमारियों के शिकार बन रहे हैं व कुछ ही दिनों में अपने जीवन से हाथ धो बैठते हैं, कई लोगों की निमर्म हत्या खुले आम हो रही है, कई आतंकवाद के शिकार बन गये हैं, कई लोग आकस्मिक सड़क या रेल दुर्घटना के शिकार बन गये हैं, कई प्राकृतिक विपदा जैसे हमारे देश में बाढ़, बादल का फटना, भूकम्प, अकाल, भू–स्खलन इत्यादि के शिकार हो गये हैं और पल भर में अपनी सारी सम्पत्ति, अपनी सारी ज़िन्दगी की कमाई खो बैठे हैं और कुछ इस सदमे से दिल के दौरे के शिकार हो गये या खुदखुशी कर चुके हैं।

इस तरह जब हमारा जीवन इतना जोखिम भरा है, और हमारे वश में कुछ भी नहीं है, जब केवल ईश्वर ही हमारा एकमात्र रक्षक और ढाल है, तो क्यों हम उस पर अपना जीवन न्यौछावर करने से डरते हैं, उसके कार्यों के लिए अपनी सम्पत्ति से कुछ भाग देने से हिचकिचाते हैं, अपनी सब चिन्ताओं, कष्टों, दुःखों, रोगों, व सभी आवश्यकताओं का भार (ईश्वर पर भरोसे के कमी के कारण) उसके चरणों में समर्पित करने के बजाय अपने कन्धों व सिर पर उठाये रहते हैं और थक जाते व निराश हो जाते हैं।

ऐसे में प्रभु येशु, जिन्हें जीवन देने व लेने का सारा अधिकार है, हम से कहते हैं-

अपना जीवन देने पर– "पुनरूत्थान और जीवन मैं हूँ। जो मुझपर विश्वास करता है, वह मरने पर भी जीवित रहेगा और जो मुझमें विश्वास करते हुए जीता है, वह कभी नहीं मरेगा।"(योहन 11:25)

"जो अपना जीवन सुरक्षित रखना चाहता

(शेष भाग पृष्ठ 3 पर)

"यह कहते हुए चिन्ता मत करो- हम क्या खायें, क्या पियें, क्या पहनें।...तुम्हारा स्वर्गिक पिता जानता है कि तुम्हें इन सभी चीज़ों की ज़रूरत है। तुम सबसे पहले ईश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज में लगे रहो और ये सब चीज़ें तुम्हें यों ही मिल जायेंगी।"(मत्ती 6:31-33)

हमें... सब कुछ छोड़ने पर क्या मिलेगा?

(पृष्ठ 2 का शेष भाग)

है, वह उसे खो देगा और जो मेरे कारण अपना जीवन खो देता, वह उसे सुरक्षित रखेगा।"(मत्ती 16:25)

"तुम्हारे माता-पिता, भाई, कुटुम्बी और मित्र भी तुम्हें पकड़वायेंगे। तुम में से कितनों को मार डाला जायेगा और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे। फिर भी तुम्हारे सिर का एक बाल भी बाँका नहीं होगा। अपने धैर्य से तुम अपनी आत्माओं को बचा लोगे।"(लूकस 21:16-19; मत्ती 10:22)

अपमान व अत्याचार सहने पर – "धन्य हो तुम, जब लोग मेरे कारण तुम्हारा अपमान करते हैं, तुम पर अत्याचार करते और तरह-तरह के झूठे दोष लगाते हैं। खुश हो और आनन्द मनाओ- स्वर्ग में तुम्हें महान् पुरस्कार प्राप्त होगा।"(मत्ती 5:11-12; 10:17-19)

क्लेश सहने पर– "संसार में तुम्हें क्लेश सहना पड़ेगा। परन्तु ढारस रखो- मैंने संसार पर विजय पायी है।"(योहन 16:33)

दान देने पर – दो और तुम्हें भी दिया जायेगा। दबा-दबा कर, हिला-हिला कर भरी हुई, ऊपर उठी हुई, पूरी-की-पूरी नाप तुम्हारी गोद में डाली जायेगी.."(लूकस 6:38; मत्ती 10:42; प्रवक्ता 17:18-19)

इस तरह हम जान गये कि प्रभु के लिए या उनकी महिमा के लिए हम जो कुछ शुद्ध अन्तःकरण से व निःस्वार्थ रूप से करेंगे, तो वह व्यर्थ नहीं जायेगा और हमें अवश्य ईश्वर पुरस्कार देगा, चाहे वह हमारी गुप्त प्रार्थना, उपवास, दान, त्याग, बलिदान या परोपकार क्यों न हो। हमारा जीवन केवल प्रभु में सुरक्षित है और उनके लिए हम कोई भी जोखिम बिना हिचकिचाये उठाने के लिए तैयार हों–अपनी प्रशंसा पाने, धैयपूर्वक बहादुरी दिखाने के लिए या ईश्वर का ध्यान आकर्षित करने के लिए नहीं, पर ईश्वर के प्रति अपना भरोसा और उसके प्रेम, दया पर हमारा दृढ़ विश्वास रखने के कारण। पर हम जानबूझ कर जोखिम उठाकर ईश्वर की परीक्षा न लें– जैसे प्रभु येशु ने शैतान के कहने पर मन्दिर के शिखर से कूद नहीं लगाई (**मत्ती 4:6**)।

धन्य है वह, जो ईश्वर पर भरोसा रखता है और उसकी आज्ञाओं पर चलता है, चाहे उसमें कितना जोखिम ही क्यों न हो। सन्त पौलुस ने भी सुसमाचार के कार्य के आगे अपना जीवन बहुमूल्य नहीं समझा और ख़तरों का सामना किया,उससे भागे नहीं(**प्रेरित च. 10:24**)। योआब ने अपने जीवन को प्रभु के हाथों सौंप कर कहा, **"प्रभु वही करे, जो उसे उचित प्रतीत हो।"(2 समू. 10:12) हम भी इसी विश्वास के साथ प्रभु पर अपना सर्वस्व सौंप दें जिससे हमारे द्वारा प्रभु की महिमा हो!! आमेन।** ☆

जीवन-धाम में जीवित परमेश्वर के जीवित साक्ष्य

पचास साल पुरानी दौरे की बीमारी से मुक्ति मिली!

प्रभु येशु को स्तुति, धन्यवाद व महिमा!

मैं, मोरनी, पिछले कई साल से हर इतवार जीवन-धाम में प्रार्थना में भाग लेती आ रही हूँ। मैं अपने बेटे किशोर के लिए, जो अब 50 साल का हो चुका है, बचपन से ही परेशान थी और उसकी सेवा कर रही थी क्योंकि उसे हर रोज़ मिर्गी के दौरे पड़ते थे। उसे कभी-कभी तीन–चार बार दौरे पड़ जाते थे– कभी खाना खाते समय, कभी चलते समय। हालत बिगड़ जाने पर वह किसी को भी मारने–पीटने लग जाता था। कभी तो वह दो–तीन घण्टे बेहोश पड़ा रहता था। हमने सब जगह डॉक्टरों को दिखा लिया– इलाहाबाद, बनारस, हरिद्वार, ऋषिकेश और दिल्ली में कोई जगह नहीं छोड़ी और सारी कमाई इलाज पर लगा दी। पर यह बीमारी नहीं गई और इसी कारण मैंने उसकी शादी भी नहीं करवाई। पर मैं प्रभु येशु से प्रार्थना करती रही। उसने मेरी सुन ली। प्रभु की कृपा से वह ठीक हो गया और पिछले छः महीने से उसे एक बार भी दौरा नहीं पड़ा। प्रभु ने मेरे बेटे के लिए एक महान् चमत्कार कर दिया। आज मैं जीवन–धाम में उसे गवाही देने के लिए साथ लाई हूँ। प्रभु येशु को लाखों–लाखों बार धन्यवाद! **मोरनी- किशोर**, फरीदाबाद।

दुष्कर्मों व कुष्ट रोग से मुक्ति मिली!

प्रभु ने मेरे परिवार का उद्धार किया!

प्रभु येशु को स्तुति, धन्यवाद व महिमा!

मैं, रवि, छः साल पहले जीवन-धाम में पहली बार अपनी पत्नी सुनीता के साथ प्रार्थना में शामिल हुआ था। वह तो हर इतवार आती रही पर मैंने आना छोड़ दिया क्योंकि मेरे कर्म बुरे थे। मैं ने शराब, चरस, गाँजा, अफीम इत्यादि बेचने का धन्धा शुरू कर दिया था और पैसों की बारिश होती जा रही थी। मेरी नज़र में किसी भी चीज़ की कोई कीमत नहीं थी। मैं खूब मार–पीट करता था और किसी से डरता नहीं था जिससे मेरी सबसे दुश्मनी हो गई थी। पडोसी भी मुझे घृणित दृष्टि से देखते थे। मेरे बाल–बच्चों का सब के साथ उठना–बैठना बन्द हो गया और चारों तरफ खौफ का माहौल बन गया। इसी दौरान मुझे कुष्ट रोग हुआ जिसका मुझे एहसास नहीं था। मैं पिछले जून से बिस्तर पर पड़ा रहा, मेरे हाथों–पैरों में घाव बनने लगे, नाखून काले पड गये, शरीर से बदबू आने लगी। जीवन–धाम आने के बाद ही मुझे अपनी गलतियों का एहसास हुआ और मैंने पश्चाताप किया। मैंने अपने सारे बुरे काम छोड दिये और बीमारी के पता चलने पर AIIMS (मेडिकल) से इलाज शुरू किया। पर प्रभु ने मुझे स्वस्थ कर दिया, मेरे शरीर के घाव भर दिये, मेरे परिवार का उद्धार किया। **रवि**, फरीदाबाद

"वह तेरे सभी अपराध क्षमा करता और तेरी सारी दुर्बलताएँ दूर करता है।" (स्तोत्र - ग्रन्थ 103:3)

45 साल की उम्र में प्रभु से सन्तान का वरदान मिला!

प्रभु येशु को स्तुति, धन्यवाद और महिमा!

मैं, गुड्डी (उम्र–45 वर्ष), अपने पति रूपराम (उम्र–47 वर्ष) व अपनी बच्ची सोमवती के साथ आज अपनी अनोखी गवाही देने आई हूँ। हमारी शादी 20 साल पहले हुई थी और हमारी कोई भी सन्तान नहीं थी। मेरे पति के मित्र की पत्नी के कहने पर हम यहाँ जीवन–धाम में एक सन्तान की प्राप्ति की आशा लिए आने लगे। प्रभु येशु ने हम पापियों की जल्द ही प्रार्थना सुन ली और हमारे सूने परिवार के लिए एक सुन्दर बच्ची का वरदान दिया, जिसका जन्म तीन महीने पहले ही हुआ है। यह प्रभु का अमूल्य वरदान है जिसका धन्यवाद अदा हम निरे शब्दों में कर नहीं सकते। प्रभु की जय!! **गुड्डी-रूपराम**, फरीदाबाद

"आपकी पत्नी... के एक पुत्र उत्पन्न होगा..। आप आनन्दित और उल्लसित हो उठेंगे और उसके जन्म पर बहुत-से लोग आनन्द मनायेंगे।"(लूकस 1:13-14)

"मैं मसीह के कारण अपनी दुर्बलताओं पर, अपमानों, कष्टों, अत्याचारों और संकटों पर गर्व करता हूँ; क्योंकि जब मैं दुर्बल हूँ, तभी बलवान् हूँ। (2 कुरिन्थि.12:10)

★ बाईबिल प्रतियोगिता ★

17) थेसलनीकियों के नाम दूसरा पत्र
a) अध्याय 1-3

सन्त पौलुस ने थेसलनीका की कलीसिया को लिखे दूसरे पत्र के सभी अध्यायों को पहले ध्यान से पढ़ें। फिर इन निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तरों को चुन कर लिख भेजें। एक प्रश्न के एक से भी ज्यादा उत्तर हो सकते हैं।

1) थेसलनीका के कुछ लोगों का जीवन इस प्रकार का हो गया है कि वेः **क)** बड़े परिश्रम से दिन-रात काम करते रहते हैं **ख)** दूसरों के काम में बाधा डालते हैं **ग)** पौलुस की दी हुई परम्परा के अनुसार नहीं चलते, **घ)** स्वंय काम नहीं करते।

2) शैतान से प्रेरित हुआ विधर्मी मनुष्य लोगों को ऐसे बहकायेगाः **क)** प्रभु का दिन समीप है बोलकर, **ख)** शक्तिशाली चिन्ह दिखाकर, **ग)** कपटपूर्ण चमत्कार करके, **घ)** पाप करने के लिए हर प्रकार का प्रलोभन देकर।

3) थेसलनीकियों को तब विश्राम मिलेगा जबः **क)** वे सुसमाचार सुनाना बन्द करेंगे, **ख)** प्रभु येशु अपने दूतों के साथ प्रकट होंगे, **ग)** प्रभु येशु अपने सन्तों के साथ अपने विश्वासियों की आराधना स्वीकार करेंगे **घ)** वे मरणोपरान्त स्वर्ग पहुँचेंगे।

4) सन्त पौलुस के अनुसार विनाश के पुत्र में इन दुर्गुणों को देखा जा सकता है **क)** सत्य विरोधी, **ख)** घमण्डी, **ग)** झूठा, **घ)** कपटी।

5) पिता परमेश्वर तथा प्रभु येशु ने हमें ये वरदान दिये हैं: **क)** उज्जवल आशा का, **ख)** चिरस्थायी सान्त्वना का, **ग)** अपने असीम प्रेम का, **घ)** भ्रान्ति का मनोभाव फैलाने का।

6) पौलुस सब कलीसियाओं में इस कलीसिया पर गौरव करते हैं क्योंकिः **क)** वे अपनी कमाई की रोटी खाते हैं **ख)** वे धैर्य के साथ अत्याचार सहते हैं **ग)** वे चुपचाप अपना काम करते हैं **घ)** वे विश्वास के साथ कष्ट सहते हैं।

7) पौलुस की ओर से क्या पाकर थेसलनीके के लोग उत्तेजित हो सकते या घबरा सकते थेः **क)** पत्र, **ख)** दण्डाज्ञा, **ग)** भविष्यवाणी, **घ)** वक्तव्य।

8) पौलुस अपने इन बातों के लिए लोगों से प्रार्थना की अपेक्षा करते हैं: **क)** प्रभु का वचन सब जगह शीघ्र ही फैल जाए, **ख)** वे पौलुस की आज्ञाओं का पालन करते रहें, **ग)** प्रभु के न्याय के दिन उन्हें विश्राम मिले, **घ)** टेढ़े तथा दुष्ट लोग उनके कार्य में बाधा न डालें।

पिछली प्रतियोगिता के सही उत्तर

16) थेसलनीकियों के नाम पहला पत्र
a) अध्याय 1-5

1) **ख)** उनकी आज्ञा मानें, **ग)** उनसे मेल कर लें, **घ)** प्रेमपूर्वक उनका सम्मान करें।

2) **ख)** पौलुस, **ग)** तिमथी, **घ)** सिल्वानुस

3) **क)** उनका गौरव, **ख)** उनका आनन्द, **ग)** उनकी आशा का मुकुट

4) **क)** पवित्र आत्मा, **ग)** सामर्थ्य, **घ)** दृढ़ विश्वास।

5) **क)** निरन्तर प्रार्थना करते रहें, **ख)** हर समय प्रसन्न रहें, **ग)** सब बातों के लिए ईश्वर को धन्यवाद दें।

6) **ख)** प्रभु येशु पर उनका अटल भरोसा, **ग)** प्रेम से प्रेरित उनका परिश्रम, **घ)** उनका सक्रिय विश्वास।

7) **क)** परिश्रम, **ख)** शुद्धता, **घ)** भ्रातृप्रेम।

8) **ख)** मुक्ति की आशा का टोप, **ग)** प्रेम का कवच।

प्रतियोगिता के नियमः

क) प्रतियोगिता के उत्तर अगले महीने के 20 तारीख तक हमारे पास पहुँच जाने चाहिएँ। उत्तर इस पोस्ट कार्ड पर या चिट्ठी में इस पते पर लिख भेजिए—**जीवन-धाम, मकान नं० 696, सैक्टर- 22, फरीदाबाद-121005, हरियाणा।**

ख) अपना नाम व पता स्पष्ट शब्दों में लिखिए। प्रतियोगिता की संख्या एवं शीर्षक लिखना ज़रूरी है। सभी उत्तर क्रमानुसार होने चाहिएँ।

ग) इनाम सिर्फ उन प्रतियोगियों को मिलेगा जो लगातार तीन प्रतियोगिताओं के सही-सही उत्तर समय पर देंगे।

मिस्सा बलिदान का समयः

मकान न०.696/सैक्टर-22 फरीदाबाद में
हर इतवार - शाम 6:30 बजे
प्रतिदिन - प्रातः 10:30 बजे मिस्सा बलिदान चढ़ाया जाता है।

पिछले 7 सालों से यहाँ पर 24 घण्टे पवित्र आराधना चलती आ रही है। आप भी हमारे साथ प्रार्थना में शामिल हो सकते हैं।

जीवन-धाम की मुख्य सेवाँएः

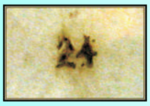

1. 24–घण्टे पवित्र आराधना (पिछले 7 सालों से)
2. विमोचन (पैशाचिक बन्धन, अभिशाप से) प्रार्थना
3. रोग–चंगाई प्रार्थना, आशीष एवं वचन की घोषणा (पिछले 18 सालों से)
4. दैनिक मध्यस्थ प्रार्थना, स्तुति एवं माला विनती ! प्रार्थनाओं के निवेदन–पत्र, डाक, ई–मेल व फोन द्वारा
5. पवित्र वचन, प्रार्थना एवं साक्ष्य उल्लेख– मासिक पत्रिका "दिव्य–ज्योति" द्वारा– हिन्दी (सन् 1995 से) एवं अंग्रेजी में (सन् 2004 से), व वेबसाईट (सन् 2002 से) द्वारा
6. आध्यात्मिक पथ–प्रदर्शन, सत्परामर्श एवं सहयोग

जीवन-धाम
फरीदाबाद

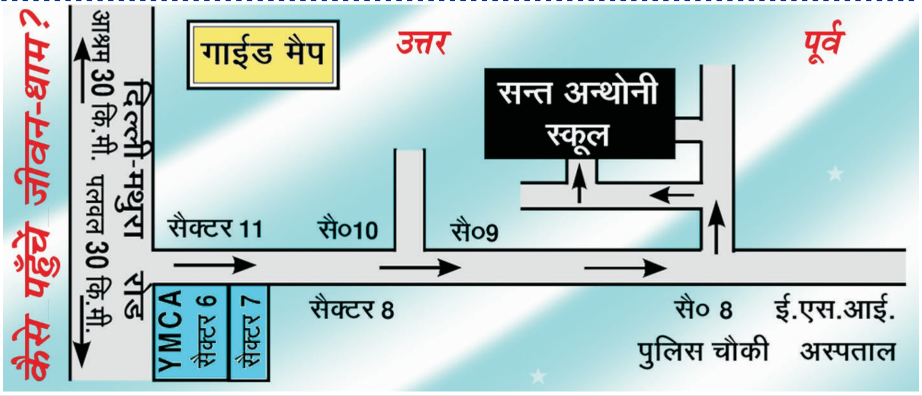

हमारी वेबसाईट (website):
www.jeevandham.org
E-mail : anthonyat696@yahoo.com

क्या आप चिन्तित और अशान्त...हैं ?
क्या आप दुःखी...हैं ?
क्या आप रोगी...हैं ?
क्या आप बेरोज़गार या गरीब...हैं ?
क्या आप विकलांग...हैं ?
क्या आप निस्सन्तान...हैं ?
क्या आप शैतान के चंगुल में..........है ?

पर यदि आप प्रभु येशु पर विश्वास करें, तो प्रभु कहते हैं, "डरो मत। तुम्हारा जी घबराये नहीं। तुम्हें शान्ति मिले।" आप सान्त्वना/चंगाई /आशीष प्राप्त करने के लिए एक जगह जा सकते हैं। वह है 'जीवन-धाम'। आप सन्त अन्थोनी स्कूल, सैक्टर-9 फरीदाबाद में हर रविवार प्रातः 9:30 बजे से 1:00 बजे तक 'जीवन-धाम' फरीदाबाद द्वारा आयोजित प्रार्थना सभा में भाग लेकर प्रभु येशु के अनुग्रहों को प्राप्त कर सकते हैं।

आओ चलें जीवन-धाम!

"जो अपने शरीर की भूमि में बोता है, वह अपने शरीर की भूमि में विनाश की फ़सल लुनेगा; किन्तु जो आत्मा की भूमि में बोता है, वह आत्मा की भूमि में अनन्त जीवन की फ़सल लुनेगा।(गलाति. 6:8)

Edited & Published by Anthony, Jeevan Dham, 696/Sec-22, Faridabad. Ph:2231126 Printed at Sabina Printing Press, 387/24, Faridabad, Haryana.